



सारांश

नीतिशास्त्र



फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा **2026**

इनोवेटिव क्लासरूम प्रोग्राम

- प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
- मौलिक अवधारणाओं की समझ के विकास एवं विश्लेषणात्मक क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान
- एनीमेशन, पॉवर प्वाइंट, वीडियो जैसी तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग
- अंतर - विषयक समझ विकसित करने का प्रयास
- योजनाबद्ध तैयारी हेतु करंट ओरिएंटेड अप्रोच
- नियमित क्लास टेस्ट एवं व्यक्तिगत मूल्यांकन
- प्री फाउंडेशन कक्षाएं
- सीसैट कक्षाएं
- PT 365 कक्षाएं
- MAINS 365 कक्षाएं
- PT टेस्ट सीरीज
- मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज
- निबंध टेस्ट सीरीज
- सीसैट टेस्ट सीरीज
- निबंध लेखन - शैली की कक्षाएं
- करंट अफेयर्स मैगजीन

नोट: ऑनलाइन छात्र हमारे पाठ्यक्रम की लाइव वीडियो कक्षाएं अपने घर पर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर देख सकते हैं। छात्र लाइव चैट विकल्प के माध्यम से कक्षा के दौरान अपने संदेह और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। वे अपने संदेह और प्रश्न नोट भी कर सकते हैं और दिल्ली केंद्र में हमारे कक्षा सलाहकार को बता सकते हैं और हम फोन/मेल के माध्यम से प्रश्नों का उत्तर देंगे।

DELHI: 7 अगस्त, 2 PM

JAIPUR: 20 जुलाई

JODHPUR: 10 अगस्त

UPSC सिविल सेवा परीक्षा 2024 में चयनित सभी उम्मीदवारों को हार्दिक बधाई

10 in Top 10 Selections in CSE 2024 (from various programs of VISION IAS)

हिन्दी माध्यम में 30+ चयन

137 AIR	182 AIR	412 AIR	438 AIR	448 AIR	483 AIR	509 AIR
अंकिता कांति	रवि राज	जितेंद्र कुमावत	ममता	सुख राम	ईश्वर लाल गुर्जर	अमित कुमार यादव
554 AIR	564 AIR	618 AIR	622 AIR	651 AIR	689 AIR	718 AIR
विमलोक तिवारी	गौरव छिम्वाल	राम निवास सियाग	आलोक रंजन	अनुराग रंजन वत्स	खेतदान चारण	रजनीश पटेल
731 AIR	760 AIR	795 AIR	865 AIR	873 AIR	890 AIR	893 AIR
तेशुकान्त	अश्वनी दुबे	कर्मवीर नरवाडिया	आनंद कुमार मीणा	सिद्धार्थ कुमार मीणा	सुषमा सागर	अरुण मालवीय
895 AIR	899 AIR	911 AIR	921 AIR	925 AIR	953 AIR	998 AIR
अजय कुमार	रितिक आर्य	अरुण कुमार	ममता जोगी	विजेंद्र कुमार मीणा	राजकेश मीणा	इकबाल अहमद

विषय सूची

1. शासन और प्रशासन में नैतिकता (ETHICS IN GOVERNANCE AND ADMINISTRATION)	
1.1. लोक प्राधिकारियों के हितों का टकराव (Conflict of Interests of Public Officials)	5
1.2. व्हिसलब्लोइंग की नैतिकता (Ethics of Whistleblowing)	5
1.3. सार्वजनिक अवसंरचना और सार्वजनिक सेवा वितरण (Public Infrastructure and Public Service Delivery)	6
1.4. सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी (Frauds in Civil Services Examination)	6
1.5. भ्रष्टाचार (Corruption)	7
1.6. सोशल मीडिया और सिविल सेवक (Social Media and Civil Servants)	7
1.7. सुशासन की भारतीय अवधारणा (Indic Idea of Good Governance)	8
2. नैतिकता और समाज (ETHICS AND SOCIETY)	
2.1. गरिमापूर्ण मृत्यु का अधिकार (Right to Die with Dignity)	9
2.2. तुरंत न्याय (Instant Justice)	9
2.3. बॉडी शेमिंग के नैतिक आयाम (Ethical Dimensions of Body Shaming)	10
2.4. शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence in Education)	11
2.5. प्रसन्नता/ सुख (Happiness)	11
2.6. अच्छा जीवन: कार्य और अवकाश के बीच संतुलन बनाने की कला (Good Life: The Art of Balancing Work and Leisure)	12
3. नैतिकता और व्यवसाय (ETHICS AND BUSINESS)	
3.1. परोपकार: सामाजिक भलाई के लिए एक नैतिक अनिवार्यता (Philanthropy: A Moral Imperative for Social Good)	14
3.2. सर्विलांस कैपिटलिज्म (Surveillance Capitalism)	14
3.3. व्यावसायिक छंटनी की नैतिकता (Ethics of Business Downsizing)	15
3.4. जिम्मेदार पूंजीवाद (Responsible Capitalism)	15
4. नैतिकता और मीडिया (ETHICS AND MEDIA)	
4.1. मीडिया एथिक्स और स्व-नियमन (Media Ethics and Self-Regulation)	16
4.2. सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स के समय में सामाजिक प्रभाव और अनुनय (Social Influence and Persuasion in times of Social Media and Influencers)	16
4.3. अनुनय और भ्रामक सूचना (Persuasion and Disinformation)	17
4.4. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लीलता (Obscenity on Digital Platforms)	17
5. नैतिकता और प्रौद्योगिकी (ETHICS AND TECHNOLOGY)	
5.1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी नैतिकता {Ethics of Artificial Intelligence (AI)}	18
5.1.1. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और क्रिएटिविटी (AI and Creativity)	18
5.2. ऑनलाइन गेमिंग की नैतिकता (Ethics of Online Gaming)	19
6. सुर्खियों में रहे प्रमुख व्यक्तित्व (KEY PERSONALITIES IN NEWS)	
6.1. महात्मा गांधी और करुणा (Mahatma Gandhi and Compassion)	20
6.2. रतन नवल टाटा (Ratan Naval Tata)	20
7. विविध (MISCELLANEOUS)	
7.1. युद्ध की नैतिकता (Ethics of War)	21
7.2. शांति के पहलू (Aspects of Peace)	21
7.3. मौजूदा दौर की विदेशी सहायता से संबंधित नैतिक सरोकार (Ethical Considerations in Contemporary Foreign Aid)	22
7.4. नैतिकता और जलवायु परिवर्तन (Ethics and Climate Change)	22
7.5. मृत्युदंड और नैतिक आयाम (Ethics of Capital Punishment)	23

"You are as strong as your Foundation"

FOUNDATION COURSE GENERAL STUDIES PRELIMS CUM MAINS 2026, 2027 & 2028

Approach is to build fundamental concepts and analytical ability in students to enable them to answer questions of Preliminary as well as Mains Exam

- Includes Pre Foundation Classes
- Includes comprehensive coverage of all the topics for all the four papers of GS Mains, GS Prelims & Essay
- Access to LIVE as well as Recorded Classes on your personal student platform Includes All India GS Mains, GS Prelims, CSAT & Essay Test Series
- Our Comprehensive Current Affairs classes of PT 365 and Mains 365 of year 2026, 2027 & 2028

**DELHI : 30 JULY, 8 AM | 7 AUGUST, 11 AM | 14 AUGUST, 8 AM
19 AUGUST, 5 PM | 22 AUGUST, 11 AM | 26 AUGUST, 2 PM | 30 AUGUST, 8 AM**

GTB Nagar Metro (Mukherjee Nagar): 10 JULY, 8 AM | 29 JULY, 6 PM

हिन्दी माध्यम 7 अगस्त, 2 PM

**AHMEDABAD: 12 JULY | BENGALURU: 22 JULY | BHOPAL: 27 JUNE | CHANDIGARH: 18 JUNE
HYDERABAD: 30 JULY | JAIPUR: 5 AUG | JODHPUR: 10 AUG | LUCKNOW: 22 JULY | PUNE: 14 JULY**

Live - online / Offline Classes

Scan the QR CODE to download VISION IAS app



अभ्यर्थियों के लिए संदेश

प्रिय अभ्यर्थियों,

- आपकी सहायता के लिए, हमने VisionIAS मेन्स 365 स्टडी मटेरियल से आवश्यक जानकारी का संकलन कर मेन्स 365 नीतिशास्त्र डॉक्यूमेंट का सारांश तैयार किया है। जैसा कि आप सभी को पता है VisionIAS का Mains 365 स्टडी मटेरियल करेंट अफेयर्स के व्यापक कवरेज के लिए प्रसिद्ध है।
- Mains 365 नीतिशास्त्र डॉक्यूमेंट के सारांश में UPSC मुख्य परीक्षा में उत्तर लेखन के लिए के लिए उपयोगी प्रमुख नैतिक घटनाओं, उनसे जुड़ी नैतिक दुविधाओं, दार्शनिक सिद्धांतों और महत्वपूर्ण नैतिक अवधारणाओं का एक समग्र और प्रासंगिक दृष्टिकोण प्रदान किया गया है।
- यह डॉक्यूमेंट आपको प्रमुख टॉपिक को जल्दी और प्रभावी ढंग से रिवाइज करने में मदद करेगा।
- अपनी तैयारी में सुधार करने और UPSC मेन्स में अच्छा प्रदर्शन सुनिश्चित करने के लिए इन जानकारीयों का उपयोग कीजिए।

एथिक्स से संबंधित फाउंडेशन से लेकर एडवांस स्तर तक की केस स्टडी को ढल करने की समझ विकसित करने में अभ्यर्थियों को सक्षम बनाने हेतु वैचारिक स्पष्टता पर जोर दिया जाएगा।

केस स्टडीज में समकालीन और वर्तमान मुद्दों के साथ-साथ विगत वर्षों में UPSC पेपर IV में पूछे गए सभी महत्वपूर्ण टॉपिक्स को शामिल किया गया है।

अधिक अंक दिलाने वाली उत्तर लिखने की विभिन्न तकनीकों पर चर्चा की जाएगी।

वन-टू-वन मेंटोरिंग सेशन

Available in English & हिन्दी

एथिक्स

केस स्टडीज मॉड्यूल

प्रवेश प्रारंभ

समसामयिक मुद्दों पर फोकस किया जाएगा तथा केस स्टडीज को वर्तमान में सुर्खियों में रहे टॉपिक्स के साथ जोड़कर पढ़ाया जाएगा।

आपकी तैयारी के दौरान एथिक्स के पेपर के लिए नियमित तौर पर शंका समाधान सत्र और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

डेली क्लास असाइनमेंट

अपडेटेड स्टडी मटेरियल

1. शासन और प्रशासन में नैतिकता (ETHICS IN GOVERNANCE AND ADMINISTRATION)

1.1. लोक प्राधिकारियों के हितों का टकराव (Conflict of Interests of Public Officials)

परिचय

हाल ही में, एक अमेरिकी फर्म ने सेबी के अध्यक्ष पर सेबी की आचार संहिता का उल्लंघन करने का आरोप लगाया, जिससे हितों के संभावित टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई।

प्रमुख हितधारक				
लोक सेवक	सरकार	नागरिक	व्यवसाय	नियामक निकाय

हितों के टकराव में शामिल नैतिक मुद्दे

- ♦ **सार्वजनिक विश्वास का कमजोर होना:** जनता के विश्वास की इस क्षति के परिणामस्वरूप **सरकारी निर्णयों और संस्थानों की वैधता भी कम हो सकती है।**
- ♦ **भ्रष्टाचार और सत्ता का दुरुपयोग:** इसके चलते **रिश्तखोरी जैसी भ्रष्ट प्रथाओं को बढ़ावा मिल सकता है।**
- ♦ **तटस्थता और निष्पक्षता:** हितों के टकराव की स्थिति में लोक प्राधिकारियों द्वारा पक्षपातपूर्ण और गलत निर्णय लिया जा सकता है।
- ♦ **अन्य:** व्यवसायों की ब्रांड इमेज और प्रतिष्ठा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, आदि।

हितों के टकराव का प्रभावी समाधान सुनिश्चित करने के लिए आगे की राह

- ♦ **प्रभावी प्रकटीकरण की प्रक्रिया को अपनाना।**
- ♦ **'जोखिम वाले' क्षेत्रों की समय-समय पर समीक्षा करना।**
- ♦ **लोक सेवकों के लिए कूलिंग ऑफ अवधि की शुरुआत।**
- ♦ **स्वतंत्र निगरानी निकायों का गठन: उदाहरण के लिए-** अमेरिका के कई राज्यों में नैतिकता आयोग का गठन किया गया है।

1.2. व्हिसलब्लोइंग की नैतिकता (Ethics of Whistleblowing)

प्रस्तावना

हाल ही में, जूलियन असांजे को विकीलीक्स (व्हिसलब्लोअर प्लेटफॉर्म) जासूसी मामले में अमेरिकी न्यायालय ने बरी कर दिया है। एडवर्ड स्नोडेन से लेकर सत्येंद्र दुबे तक, कई व्हिसलब्लोअर्स ने अपने विवेक के अनुसार काम किया, लेकिन क्या उनके कार्य हमेशा नैतिक रहे हैं?

प्रमुख हितधारक					
व्हिसल ब्लोवर	नागरिक/समाज	सरकार/नियामक निकाय	संगठन	मीडिया हित	समर्थन समूह/ NGO हित

व्हिसलब्लोइंग में शामिल नैतिक दुविधाएँ

- ♦ **व्हिसलब्लोअर की सुरक्षा बनाम राष्ट्रीय सुरक्षा:** व्हिसलब्लोअर्स की सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष खतरों पर विचार करते हुए एक संतुलन स्थापित करना।
- ♦ **जनता का सूचना का अधिकार बनाम गोपनीयता बनाए रखने की सरकार की जिम्मेदारी:** सरकार की कार्रवाइयों के बारे में जानने के नागरिकों के अधिकार और कुछ मामलों में गोपनीयता बनाए रखने की सरकार की जिम्मेदारी के बीच संतुलन होना चाहिए।
- ♦ **निष्ठा दशाने का कर्तव्य बनाम नैतिक दायित्व:** कर्मचारी के कर्तव्य और उनके नैतिक दायित्व के बीच टकराव हो सकता है।
- ♦ **सुरक्षा बनाम जवाबदेही:** व्हिसलब्लोअर को प्रतिशोध से बचाने और झूठी या दुर्भावनापूर्ण रिपोर्टिंग के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने में नैतिक रूप से विचार किया जाए।

आगे की राह

- ❖ **दिसलब्लोअर्स सुरक्षा अधिनियम, 2014** को प्रभावी ढंग से मजबूत बनाकर लागू करना चाहिए।
- ❖ सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों को कवर करने वाले **व्यापक कानून विकसित** करना चाहिए।
- ❖ राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में गोपनीयता बनाए रखते हुए जनता के लिए बाधारहित तरीके से सूचना तक पहुँच सुनिश्चित करना।

1.3. सार्वजनिक अवसंरचना और सार्वजनिक सेवा वितरण (Public Infrastructure and Public Service Delivery)

परिचय

दिल्ली में **हवाई अड्डे की छत का गिरना**, आदि जैसी **सार्वजनिक अवसंरचना की विफलता** की पिछली घटनाओं में जान-माल का काफी नुकसान हुआ है। ये घटनाएँ **सार्वजनिक अवसंरचना की खराब गुणवत्ता** और बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण सुनिश्चित करने में सरकार की **विफलता को उजागर** करती हैं।

सार्वजनिक सेवा वितरण में शामिल नैतिकता संबंधी मुद्दे

- ❖ **व्यावसायिक नैतिकता की कमी:** सरकारी कर्मचारियों में अक्सर **प्रबंधकीय कौशल** की कमी होती है।
- ❖ **'सार्वजनिक सेवा' के प्रति निष्ठा की कमी:** सरकारी कर्मचारी अपने सार्वजनिक **कर्तव्य** और जिम्मेदारी से ज़्यादा **निजी लाभ को प्राथमिकता** देते हैं।
- ❖ **भ्रष्टाचार:** उदाहरण के लिए- PDS वितरण में **लीकेज**।
- ❖ **जवाबदेही और पारदर्शिता की कमी:** गंभीर त्रुटियों के प्रति **न्यायोचित और निष्पक्ष कार्यवाही** की कमी **भ्रष्ट आचरण के निवारण** को कमजोर करती है।

आगे की राह

- ❖ **न्यू पब्लिक मैनेजमेंट (NPM):** कुशल प्रथाओं को सार्वजनिक क्षेत्रों में लागू करना।
- ❖ सक्षम लोक सेवकों में **नैतिक मूल्यों का विकास करना**।
- ❖ **ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देना:** उदाहरण के लिए- यूनिफाइड मोबाइल एप्लीकेशन फॉर न्यू-एज गवर्नेंस (उमंग/ UMANG)।
- ❖ **परियोजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी:** कई स्तरों पर नियमित ऑडिट करना।

1.4. सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी (Frauds in Civil Services Examination)

प्रस्तावना

हाल ही में, कुछ सिविल सेवकों पर प्रतिष्ठित सिविल सेवाओं में प्रवेश करने के लिए जाली प्रमाण-पत्र बनाने के आरोप लगे हैं। साथ ही, ऐसे मामले भी सामने आए हैं जहाँ सिविल सेवा में शामिल होने के इच्छुक अभ्यर्थियों ने परीक्षा में धोखाधड़ी करने के लिए ChatGPT का उपयोग किया है। ऐसे मुद्दे सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी और बेईमानी के बढ़ते मामलों की ओर संकेत करते हैं।

प्रमुख हितधारक			
भर्ती एजेंसियां (जैसे UPSC)	आम जनता	सरकार	आकांक्षी सिविल सेवक

इसमें शामिल नैतिक मुद्दे

- ❖ **सामाजिक न्याय के लिए हानिकारक:** सकारात्मक कार्यों की वैधता और निष्पक्षता पर सवाल उठना।
- ❖ **प्रशासनिक निहितार्थ:** सिविल सेवाओं में अनैतिक अभ्यर्थियों का प्रवेश।
- ❖ **उपयोगितावाद (Utilitarianism) का उल्लंघन:** धोखाधड़ी/ सत्ता का दुरुपयोग बड़े पैमाने पर समाज के लिए हानिकारक है।
- ❖ **चरित्र के बिना ज्ञान:** धोखाधड़ी और सत्ता का दुरुपयोग **सात सामाजिक पापों में से एक (यानी चरित्र के बिना ज्ञान)** है।
- ❖ **अन्य:** कांट के निरपवाद कर्तव्यादेश (Categorical Imperative) और कर्तव्यशास्त्र के विरुद्ध।

आगे की राह

- ❖ **छात्रों में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सत्यवादिता और आत्म-सम्मान जैसे मूल्यों को विकसित करना।**
- ❖ अभ्यर्थियों के चयन के बाद उनके **परीक्षा की प्रक्रिया में सुधार करना, जैसे सत्यापन की प्रक्रियाएँ कठोर करना।**
- ❖ **अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करना** (ऑस्ट्रेलियाई लोक सेवा अधिनियम द्वारा लोक सेवा मूल्यों का एक सेट निर्धारित करना)।

1.5. भ्रष्टाचार (Corruption)

परिचय

हाल ही में, केंद्रीय सतर्कता आयोग ने अपनी 60वीं वार्षिक रिपोर्ट जारी की। इस रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में सभी श्रेणियों के अधिकारियों/ कर्मचारियों के खिलाफ **भ्रष्टाचार की 74,203 शिकायतें** प्राप्त हुईं। इनमें से 66,373 का निपटारा कर दिया गया, जबकि 7,830 मामले अभी लंबित हैं।

प्रमुख हितधारक				
लोक सेवक	नागरिकों	नागरिक समाज	न्यायतंत्र	मिडिया

भ्रष्टाचार के नैतिक निहितार्थ

- ❖ **असमानता:** यह उन लोगों को विशेष लाभ पहुंचाता है जो रिश्त देने या एहसान करने में सक्षम होते हैं।
- ❖ **विश्वास का उल्लंघन:** भ्रष्टाचार से **सार्वजनिक संस्थानों में लोगों के विश्वास** में कमी आती है।
- ❖ **हितों का टकराव:** महत्वपूर्ण पद पर बैठे व्यक्ति अपने कर्तव्यों को नजरअंदाज कर अपने व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देते हैं।
- ❖ **सामाजिक न्याय को क्षति:** विकास संबंधी परियोजनाओं के लिए निर्धारित धन का गबन करने से नागरिक आवश्यक सेवाओं से वंचित रह जाते हैं।
- ❖ **सत्यनिष्ठा का क्षरण:** एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना, जहां बेईमानी, रिश्तखोरी, आदि को सिस्टम के हिस्से के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।
- ❖ **नैतिक पतन:** नैतिक सापेक्षवाद (Moral relativism) का रवैया समाज के नैतिक ताने-बाने को कमज़ोर करता है, क्योंकि व्यक्ति भ्रष्ट कार्यों को तर्कसंगत बनाने लगते हैं।
- ❖ **विधि के शासन को कमज़ोर करना:** कानून के प्रवर्तन का चयनात्मक या मनमाना हो जाना।

आगे की राह (भ्रष्टाचार से निपटने के लिए द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें)

- ❖ **भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988** में संशोधन किया जाना चाहिए ताकि मिलिभगत वाली रिश्तखोरी को एक विशेष अपराध बनाया जा सके।
- ❖ रंगे हाथों पकड़े गए या आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति रखने के मामले में पकड़े गए लोक सेवक पर मुकदमा चलाने के लिए **पूर्व मंजूरी की आवश्यकता नहीं** होनी चाहिए।
- ❖ लोक सेवक अपने भ्रष्ट कृत्यों से राज्य या नागरिकों को नुकसान पहुंचाते हैं, उन्हें **नुकसान की भरपाई** करने के लिए उत्तरदायी बनाया जाएगा।
- ❖ **मुकदमों में तेजी लाना** (समय सीमा तय करने वाला एक कानूनी प्रावधान शामिल किया जाना चाहिए)

1.6. सोशल मीडिया और सिविल सेवक (Social Media and Civil Servants)

परिचय

कई सिविल सेवकों की इंस्टाग्राम सेलिब्रिटी बनने की बढ़ती प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

प्रमुख हितधारक					
लोक सेवक	सरकार	नागरिक/जनता	मीडिया	सहकर्मी/ साथी	नियामक निकाय

सिविल सेवकों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित नैतिक मुद्दे

- ❖ **तटस्थता और अनामिता (Anonymity) का सिद्धांत:** सिविल सेवा मूल्यों के अनुसार, अधिकारियों को अपनी सार्वजनिक छवि बनाने या किसी कृत्य के लिए लोगों की प्रशंसा बटोरने से बचना चाहिए।
- ❖ **सरकार के संसदीय स्वरूप के साथ असंगत:** नौकरशाह जनता के प्रति प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी नहीं होते हैं।
- ❖ **निजता का उल्लंघन और राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा:** सूचना लीक होने का खतरा रहता है।
- ❖ **यह व्यक्ति की पेशेवर और निजी पहचान के बीच के अंतर को अस्पष्ट कर सकता है:** ऑनलाइन गतिविधियों को सहकर्मी, नियोक्ता और आम लोग आसानी से देख सकते हैं।
- ❖ **अनुचित आत्म-प्रचार:** कई सिविल सेवकों के प्रशंसक और फॉलोवर्स उनके पोस्ट्स का प्रचार करते हैं जिससे उन सिविल सेवकों के प्रदर्शन के संबंध में एक पब्लिक नैरेटिव तैयार होता है।

आगे की राह (सोशल मीडिया के संबंध में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा कुछ बुनियादी मूल्य प्रस्तुत किए गए हैं)

- ◆ जब तक आपको अधिकार न दिया जाए तब तक कोई टिप्पणी और प्रतिक्रिया न दें, विशेष रूप से उन मामलों में जो न्यायालय में विचाराधीन (Sub-judice) हैं।
- ◆ विनम्र रहें, विवेकशील बनें और सभी का सम्मान करें तथा किसी के खिलाफ व्यक्तिगत टिप्पणी न करें।
- ◆ प्रासंगिक नियमों और विनियमों का अनुपालन करें।
- ◆ अन्य व्यक्तियों की व्यक्तिगत और नही अपनी निजी जानकारी साझा न करें।

1.7. सुशासन की भारतीय अवधारणा (Indic Idea of Good Governance)

परिचय

हाल ही में, भारत में P2G2 या जनहितकारी सुशासन के सिद्धांत पर बल देने के लिए कदम उठाया गया। साथ ही, अमेरिका में गवर्नमेंट एफिशिएंसी विभाग की स्थापना की गई। दोनों ही देशों द्वारा उठाए गए ये कदम बेहतर और जनोन्मुखी प्रशासन की बढ़ती आवश्यकता को दर्शाते हैं। इस संदर्भ में, भारत की प्राचीन परंपराओं को पुनः समझना आवश्यक हो गया है, जिनमें न्याय, निष्पक्षता और जनकल्याण पर आधारित “राजधर्म” की अवधारणा निहित थी।

सुशासन की भारतीय अवधारणा

- ◆ **बृहदारण्यक उपनिषद:** इसमें राजा के लिए इस कर्तव्य पर बल दिया गया है कि वह धर्म की रक्षा करे और लोक-कल्याण सुनिश्चित करे।
- ◆ **मुण्डक उपनिषद:** सुप्रसिद्ध “सत्यमेव जयते” वाक्यांश इसी ग्रंथ से लिया गया है, जिसका अर्थ है “सत्य की विजय होती है”।
- ◆ **रामायण:** इसमें “रामराज्य” की अवधारणा प्रस्तुत की गई है, जो आदर्श शासन का प्रतीक है।
- ◆ **कौटिल्य का अर्थशास्त्र:** इसमें योगक्षेम अर्थात् नागरिकों के कल्याण की अवधारणा प्रस्तुत की गई है। इसमें राजधर्म का वर्णन किया गया।
- ◆ **अंत्योदय:** यह महात्मा गांधी के विचारों पर आधारित है। इसमें समाज के सबसे दुर्बल वर्ग के कल्याण के जरिए सर्वोदय (सभी का विकास) का लक्ष्य रखा गया है।

सुशासन की भारतीय अवधारणा की वर्तमान प्रासंगिकता

- ◆ **वैश्वीकरण के अनुरूप ढलना:** वसुधैव कुटुंबकम (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) की अवधारणा वैश्विक एकता और समावेशिता को बढ़ावा देती है।
- ◆ **लोकतंत्र की रक्षा:** सरकार और नागरिक समाज/ नागरिकों के बीच सहयोग सुनिश्चित करके यह प्राप्त किया जा सकता है।
- ◆ **सर्वजनहिताय - सर्वजनसुखाय (Welfare for All):** अंत्योदय का विचार, समावेशी विकास (Inclusive Development) की आधुनिक अवधारणा के अनुरूप ही है।
- ◆ **संघर्ष समाधान (Conflict Resolution):** न्यायशास्त्र की न्यायिक प्रणाली में, न्याय, निष्पक्षता और मध्यस्थता पर बल दिया जाता है।



Vision IAS की ओर से पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज

(UPSC प्रीलिम्स के लिए रगार्ट रिवीजन, प्रैक्टिस और समग्र तैयारी हेतु ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज के तहत एक पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज)

- » UPSC द्वारा विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के साथ-साथ VisionIAS द्वारा तैयार किए गए 25,000 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाले प्रश्नों का विशाल संग्रह
- » अपनी जरूरत के अनुसार विषयों और टॉपिक्स का चयन करके पर्सनलाइज्ड टेस्ट तैयार करने की सुविधा
- » परफॉर्मेंस इंप्रूवमेंट टेस्ट (PIT)
- » टेस्ट में अम्यर्थी के प्रदर्शन के आधार पर, सुधार की गुंजाइश वाले क्षेत्रों पर फीडबैक



अधिक जानकारी के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

2026

ENGLISH MEDIUM
27 JULY

हिन्दी माध्यम
27 जुलाई

2. नैतिकता और समाज (ETHICS AND SOCIETY)

2.1. गरिमापूर्ण मृत्यु का अधिकार (Right to Die with Dignity)

परिचय

हाल ही में, जैन समुदाय की एक 3 वर्षीय बच्ची की संथारा (मृत्यु तक उपवास) की प्रथा के जरिए मृत्यु हो गई। इसके अतिरिक्त, फ्रांस ने एक विधेयक पारित किया है, जो असहनीय और लाइलाज बीमारियों से पीड़ित वयस्कों को चिकित्सकीय सहायता से मृत्यु (Assisted dying) चुनने की अनुमति देता है। उपर्युक्त घटनाक्रम गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार के सिद्धांतों को उजागर करते हैं।

प्रमुख हितधारक			
असाध्य रूप से बीमार रोगी	स्वास्थ्य सेवा प्रदाता (डॉक्टर, आदि)	विधि और नीति निर्माता	समग्र समाज

गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार के पक्ष में तर्क

- ♦ **जीवन की गुणवत्ता:** जीवन की गुणवत्ता केवल एक साधारण जीवन जीने से कहीं बढ़कर है। इसमें मनोवैज्ञानिक कल्याण, संज्ञानात्मक क्षमता शामिल है।
- ♦ **स्वायत्तता का सम्मान:** स्वायत्तता मानव नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। सक्षम व्यक्तियों को मृत्यु का चुनाव करने का अधिकार होना चाहिए।
- ♦ **न्याय:** जब उपचारात्मक दवा विफल हो जाती है और पैलियेटिव देखभाल पर्याप्त रूप से पीड़ा को कम नहीं कर पाती है, तो उपचार जारी रखने से व्यक्ति को अधिक पीड़ा हो सकती है।

गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार के विरुद्ध तर्क

- ♦ **जीवन की पवित्रता:** उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म अहिंसा और नुकसान न पहुंचाने की अवधारणा के माध्यम से जीवन की पवित्रता का प्रचार करता है।
- ♦ **संवैधानिक नैतिकता:** उदाहरण के लिए, अनुच्छेद 25(1) के तहत धर्म की स्वतंत्रता पर लोक व्यवस्था, सदाचार (नैतिकता) और स्वास्थ्य के हित में उचित प्रतिबंध लगाए गए हैं।
- ♦ **पैलियेटिव देखभाल:** इच्छामृत्यु के बिना भी अच्छी देखभाल करना रोगी की पीड़ा को कम कर सकती है।
- ♦ **हानि न पहुंचाने का सिद्धांत (कोई नुकसान न पहुंचाना):** यह सिद्धांत चिकित्सा पेशेवरों की हिप्पोक्रेटिक शपथ के भी अनुरूप है, जिसमें "कोई हानि नहीं पहुंचाने" का संकल्प होता है।
- ♦ **कांट के दर्शन के विपरीत:** इमैनुएल कांट के अनुसार, जीवन की रक्षा करना एक सार्वभौमिक नैतिक कर्तव्य है।
- ♦ **दुरुपयोग की संभावना:** नाबालिग और गंभीर रूप से बीमार रोगियों के मामले में, स्वायत्तता के सिद्धांत का दुरुपयोग किया जा सकता है।

गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए आगे की राह

- ♦ इच्छामृत्यु की प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से विनियमित किया जाना चाहिए।
- ♦ इच्छामृत्यु की अनुमति देने से पहले, एक पूर्ण मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन करना।
- ♦ **देखभाल एक नैतिक दृष्टिकोण:** विशेष रूप से नाबालिगों और मानसिक रूप से कमजोर रोगियों के मामलों में सहानुभूति और करुणा पर आधारित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

2.2. तुरंत न्याय (Instant Justice)

प्रस्तावना

हाल ही में, सुप्रीम कोर्ट ने माना कि प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों और विधि की सम्यक् प्रक्रिया का पालन किए बिना निजी इमारतों को गिराना या ध्वस्त करना अराजकता की स्थिति के समान है। यह शक्ति या ताकत के बल पर किया गया अत्याचार है।

प्रमुख हितधारक				
पीड़ित	कानून प्रवर्तन	समाज	अपराधी	सरकार

तुरंत न्याय के बढ़ते मामलों के पीछे कारण

- ♦ **न्याय वितरण प्रणाली में घटता विश्वास:** न्याय मिलने में अत्यधिक देरी ने लोगों में कानून के प्रति भय और विश्वास को खत्म कर दिया है।
- ♦ **भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी:** बलात्कार, हत्या या बाल उत्पीड़न से जुड़े मामलों में लोगों की भावनाएं बहुत तीव्र हो जाती हैं।
- ♦ **भ्रामक सूचना का प्रसार:** यह लोगों को सही जानकारी के बिना भीड़ के रूप में इकट्ठा कर सकती है। इससे भीड़ सतर्कता न्याय (Vigilante Justice) करने की दिशा में अग्रसर होती है।
- ♦ **नैतिक पत्रकारिता से समझौता:** अपराध की कहानियों को सनसनीखेज बनाने में मीडिया की भूमिका अक्सर जनता में आक्रोश पैदा करती है।
- ♦ **लोक धारणा:** उदाहरण के लिए, पुलिस द्वारा की गई मुठभेड़ों को अक्सर भविष्य के लिए **मजबूत निवारक** माना जाता है।

तुरंत न्याय में शामिल नैतिक मुद्दे



विधि का शासन बनाम विधि द्वारा शासन:

तुरंत न्याय विधि के शासन के विचार को चोट पहुंचाता है और मनमाने या पक्षपातपूर्ण निर्णयों को बढ़ावा देता है।



क्रिया बनाम त्वरित न्याय:

तुरंत न्याय के मामले में व्यक्ति को प्राप्त कानूनी सुरक्षा से जुड़े उपायों को शामिल नहीं किया जाता है। इससे अभियुक्त को संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत प्राप्त निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार का उल्लंघन होता है।

• इस प्रकार, यह 'दोषी सिद्ध होने तक निर्दोष माने जाने के सिद्धांत के खिलाफ है।



प्रतिशोधात्मक बनाम सुधारात्मक न्याय:

तुरंत न्याय अक्सर प्रतिशोधात्मक न्याय के सबसे खराब पहलुओं में से एक है।



साधन बनाम साध्य की बहस:

यह सवाल उठता है कि क्या वांछनीय या न्यायसंगत परिणाम (जैसे- आपराधिक मामलों में त्वरित न्याय) प्राप्त करने के लिए हम उन तरीकों का उपयोग कर सकते हैं जो मूल नैतिक सिद्धांतों या कानूनी प्रक्रियाओं का उल्लंघन करते हैं।

आगे की राह

- ♦ **प्रतिशोधात्मक न्याय को पुनर्स्थापनात्मक न्याय के साथ संतुलित करना**
- ♦ न्यायिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। इससे कानूनी प्रणाली के भीतर **पारदर्शिता, दक्षता और जवाबदेही को बढ़ावा** मिलेगा।
- ♦ पुलिस को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि न्यायालय में अपनी बेगुनाही साबित करने का अभियुक्त का संवैधानिक अधिकार सुरक्षित रहे।

2.3. बॉडी शेमिंग के नैतिक आयाम (Ethical Dimensions of Body Shaming)

परिचय

बॉडी शेमिंग का अर्थ है किसी व्यक्ति की शारीरिक बनावट, आकार, रूप या उसकी हाव-भाव के आधार पर उसकी आलोचना या उपहास करना। यह किसी के साथ भी हो सकता है, और कोई भी इसका शिकार बन सकता है।

नैतिक फ्रेमवर्क और उल्लंघन



कांट का नैतिक सिद्धांत

अगर हम किसी व्यक्ति को सिर्फ उसके शरीर या रूप के आधार पर आंकते हैं और उसे एक उत्पाद या मुनाफे का साधन मानते हैं, तो यह उसकी **मानवीय गरिमा** एवं आत्म-मूल्य का अपमान है। यह उसे एक इंसान नहीं, बल्कि एक 'उपयोग की वस्तु' बना देता है - जो कि नैतिक रूप से गलत है।



उपयोगितावाद

ऐसे प्रचार या व्यवहार से भले ही **थोड़े समय के लिए** व्यापार को फायदा हो, लेकिन वे मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, रुढ़ियों और भेदभाव के माध्यम से **दीर्घकालिक नुकसान** पहुंचाती हैं।



सद्गुण आधारित तिकता

एक अच्छे समाज में **करुणा और समावेशिता** जैसे गुण होने चाहिए।



निष्पक्षता के रूप में न्याय (रॉल्स)

कोई भी व्यक्ति ऐसी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेगा जो शारीरिक बनावट के आधार पर **भेदभाव** करती हो।

आगे की राह

- ◆ **मजबूत विनियम:** ऐसे विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानूनों को लागू करना जो शरीर आधारित भेदभाव को बढ़ावा देते हैं।
- ◆ **मीडिया जागरूकता:** उदाहरण: डव (Dove) के “कैंपेन फॉर रियल ब्यूटी” ने सभी रुढ़ियों को तोड़ा है।
- ◆ **नैतिक मार्केटिंग:** कंपनियों को समावेशिता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और ऐसे कंटेंट से बचना चाहिए जो शारीरिक बनावट को शर्मसार करते हैं।
- ◆ **मानसिक स्वास्थ्य और संवाद:** बॉडी शेमिंग से प्रभावित लोगों के लिए मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करनी चाहिए।
- ◆ **माता-पिता/स्कूलों की भूमिका:** बॉडी पॉजिटिव सोच को बढ़ावा दें, बच्चों की **शारीरिक बनावट पर टिप्पणी** करने से बचें, आदि।

2.4. शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence in Education)

परिचय

परंपरागत रूप से, शिक्षा मुख्यतः **संज्ञानात्मक कौशल (Cognitive skills)** के विकास पर केंद्रित थी और **बुद्धिमत्ता** को शैक्षिक उपलब्धि के **प्राथमिक चालक के रूप में** देखा जाता था। हालांकि, एक हालिया अध्ययन से पता चला है कि **गैर-संज्ञानात्मक कौशल और भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI)** किसी स्टूडेंट की शैक्षणिक उपलब्धियों को आकार देने में मस्तिष्क की बुद्धिमत्ता जितनी ही महत्वपूर्ण है।

शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व

- ◆ बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन।
- ◆ सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य।
- ◆ परानुभूति और करुणा का विकास।
- ◆ प्रभावी संप्रेषण के जरिए संबंधों को प्रगाढ़ बनाना।
- ◆ दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित करना।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करने के तरीके

- ◆ सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SEL) कार्यक्रम।
- ◆ सहयोगात्मक शिक्षण: उदाहरण के लिए- **हैप्पीनेस करिकुलम, दिल्ली**।
- ◆ चिंतन और आत्म-जागरूकता अभ्यास: ध्यान, डायरी लेखन आदि स्टूडेंट्स को आत्म-जागरूकता और आत्म-संयम विकसित करने में मदद करता है।
- ◆ शिक्षकों और कर्मचारियों को सशक्त बनाना: EI शिक्षकों को भावनात्मक जरूरतों को पहचानने में मदद करता है।
- ◆ फीडबैक सिस्टम: छात्र सर्वेक्षण, अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभाव और सहकर्मी के साथ संबंध, अनुशासन रेफरल जैसे व्यवहार संकेतकों के माध्यम से उठाए गए कदमों के प्रभाव को मापना।
- ◆ **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020** में मूलभूत और संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ-साथ **सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक** स्वभाव पर ध्यान केंद्रित करके प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता को विकसित करने पर जोर दिया गया है।

निष्कर्ष

भावनात्मक बुद्धिमत्ता छात्रों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह बेहतर लर्निंग, मानसिक सेहतमंदी और सामाजिक कौशल विकसित करने हेतु उपयोगी है। शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शामिल करने से सहानुभूतिपूर्ण, चुनौती से बेहतर तरीके से निपटने वाले और जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण होता है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 के समग्र विकास के लक्ष्य के अनुरूप है।

2.5. प्रसन्नता/ सुख (Happiness)

परिचय

“प्रसन्नता एक चयन है जो कभी-कभी प्रयास की मांग करता है” - ऐस्चिलस। यह उद्धरण हाल ही में जारी **वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2025** में भारत की स्थिति को देखते हुए और महत्वपूर्ण हो जाता है। इसमें **147 देशों की सूची में भारत 118वें स्थान पर** है। भारत की स्थिति इसके पड़ोसी देशों, जैसे- नेपाल और पाकिस्तान से भी खराब है।

वर्तमान जीवन-शैली में प्रसन्नता के समक्ष मौजूद बाधाएं

बाह्य कारक

- ❖ **नकारात्मक सामाजिक तुलनाएं:** जैसे- अवास्तविक मानक (जैसे- शरीर, सुंदरता, आदि)।
- ❖ **सामाजिक समर्थन प्रणालियों की कमी:** दुनिया भर में 19% युवाओं ने बताया कि उनके पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिस पर वे सामाजिक सहयोग के लिए विश्वास कर सकें। (2023)
- ❖ **वित्तीय दबाव और असुरक्षा:** उदाहरण के लिए, गरीबी एक ऐसा बोझ है जो व्यक्तियों की सोचने-समझने की शक्ति को कम कर देती है।
- ❖ **हानिकारक पदार्थों के संपर्क में आना:** उदाहरण के लिए, मादक पदार्थों का सेवन मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ देता है।

आंतरिक कारक

- ❖ **आत्म-संदेह एवं आत्म-सम्मान में कमी:** उदाहरण के लिए, जब व्यक्ति खुद को नकारात्मक रूप में देखने लगता है तो इससे चिंता, अवसाद, आदि बढ़ जाते हैं।
- ❖ **वर्तमान क्षण में न जीना:** लगातार नकारात्मक सोचना, हर बात को **ज़्यादा सोचते रहना** और अतीत व भविष्य में रहने जैसे अनसुलझे मानसिक आघात इंसान को अंदर ही अंदर तोड़ देते हैं।
- ❖ **अत्यधिक स्क्रीन टाइम:** आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के अनुसार, स्क्रीन टाइम में वृद्धि और खुले में खेलने के समय में कमी युवाओं को एक **'चितित पीढ़ी'** के रूप में तब्दील कर रही है।

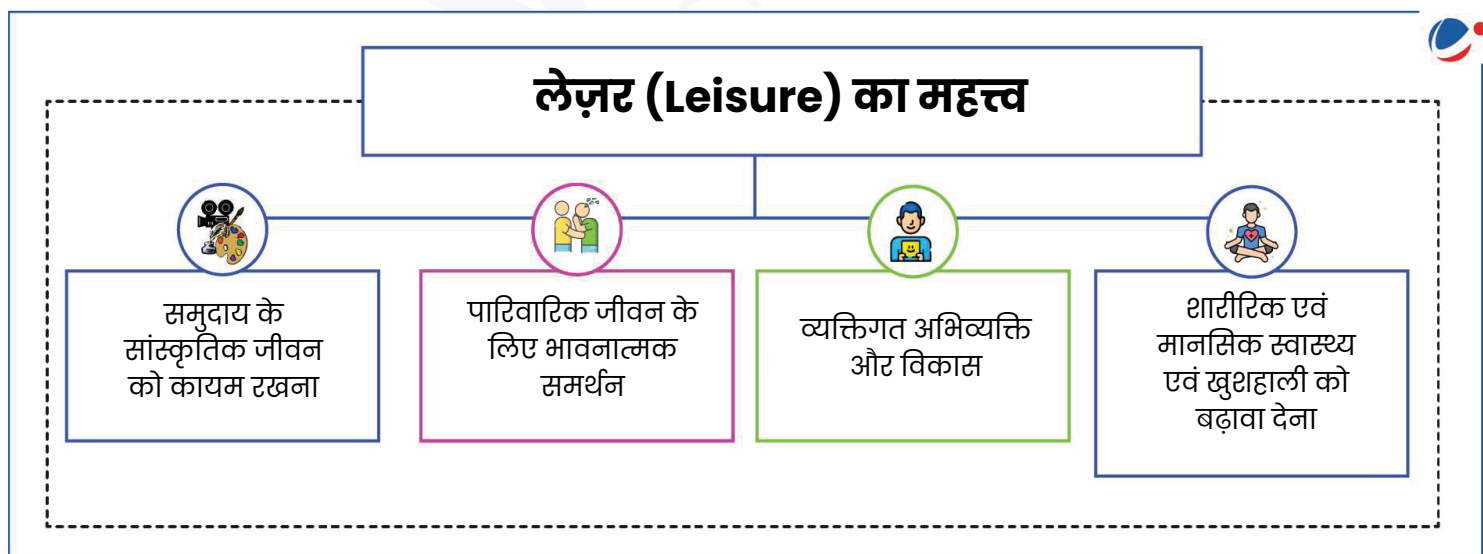
सिविल सेवक नागरिकों के बीच प्रसन्नता के स्तर को कैसे बढ़ा सकते हैं

- ❖ **जन-केंद्रित गवर्नेंस और कुशल सेवा वितरण को अपनाना**
- ❖ **ई-गवर्नेंस, सूचना का अधिकार, सामाजिक लेखा-परीक्षण आदि के माध्यम से भ्रष्टाचार को कम करना।**
- ❖ **मानसिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देना**
- ❖ **सामाजिक सद्भाव और समुदाय निर्माण को प्रोत्साहन देना:** उदाहरण के लिए, सांप्रदायिक तनाव को कम करने के लिए अंतर-धार्मिक संवाद को बढ़ावा देना।

2.6. अच्छा जीवन: कार्य और अवकाश के बीच संतुलन बनाने की कला (Good Life: The Art of Balancing Work and Leisure)

परिचय

एंग्लिया रस्कैन विश्वविद्यालय के हालिया शोध से पता चलता है कि पेंटिंग करना, बुनाई करना या मिट्टी के बर्तन बनाने जैसी अवकाशकालीन यानी लेज़र गतिविधियां **कार्य की तुलना में हमारे कल्याण में अधिक वृद्धि** करती हैं।



कार्य और अवकाश के बीच संबंध

पूरक संबंध (Complementary Relationship)

- ❖ **विकल्पों के चुनाव की स्वतंत्रता और आंतरिक प्रेरणा:** उदाहरण के लिए- उपन्यास लिखना या समाचार-पत्रों के लिए कॉलम लिखना उन लोगों को अवकाश जैसा लग सकता है जो पढ़ने और लिखने में आनंद का अनुभव करते हैं।

- ◆ **कल्याण सुनिश्चित करना:** उदाहरण के लिए- **रोजगार लोगों को संबंध बनाने** और भावनाओं को नियंत्रित करने की क्षमता में सुधार करने का अवसर उपलब्ध कराता है।

विपरीत संबंध

- ◆ **स्वतंत्रता बनाम जिम्मेदारियां:** यहां तक कि पर्यटन जैसी अवकाश गतिविधियां भी कार्य प्रतिबद्धताओं के कारण थकान, चिंता आदि का कारण बन सकती हैं।
- ◆ **आत्म-अभिव्यक्ति बनाम व्यक्तिगत विकास:** कार्यस्थल पर एक निश्चित मानक से **खराब प्रदर्शन स्वीकार्य नहीं हो सकता** है।

आगे की राह

- ◆ **सकारात्मक कार्य संस्कृति:** लोकतांत्रिक नेतृत्व कौशल को अपनाकर, खुले तौर पर विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर सकारात्मक कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- ◆ **लचीलापन अपनाना:** यद्यपि प्रौद्योगिकी ने कार्यस्थल और घर के बीच के अंतर को धुंधला कर दिया है, परन्तु यह महत्वपूर्ण लचीलापन भी प्रदान करता है।
- ◆ **सीमाएं निर्धारित करना:** काम के घंटे स्पष्ट रूप से निर्धारित किए जाने चाहिए और उनका पालन करना चाहिए।



मुख्य परीक्षा

2025 के लिए 1 वर्ष का

समसामयिक घटनाक्रम

केवल 60 घंटे में

ENGLISH MEDIUM

1 July | 5 PM

हिन्दी माध्यम

5 July | 5 PM

- ✍ द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, PIB, लाइवमिंट, टाइम्स ऑफ इंडिया, इकोनॉमिक टाइम्स, योजना, आर्थिक सर्वेक्षण, बजट, इंडिया ईयर बुक, RSTV आदि का समग्र कवरेज।
- ✍ मुख्य परीक्षा हेतु विशिष्ट लक्ष्योन्मुखी सामग्री।
- ✍ मुख्य परीक्षा के दृष्टिकोण से एक वर्ष की समसामयिक घटनाओं की खंड-वार बुकलेट्स (ऑनलाइन स्टूडेंट्स के लिये मेटेरियल केवल सॉफ्ट कॉपी में ही उपलब्ध)
- ✍ लाइव और ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाएं जो दूरस्थ अभ्यर्थियों के लिए सहायक होंगी जो क्लास टाइमिंग में लचीलापन चाहते हैं।



3. नैतिकता और व्यवसाय (ETHICS AND BUSINESS)

3.1. परोपकार: सामाजिक भलाई के लिए एक नैतिक अनिवार्यता (Philanthropy: A Moral Imperative for Social Good)

परिचय

इंडिया फिलैन्थ्रॉपी रिपोर्ट 2025 के अनुसार, भारत में परोपकारी वित्त-पोषण में वृद्धि हो रही है, जिसका मुख्य कारण कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के तहत व्यय करना है।

परोपकारिता से जुड़ी नैतिक चुनौतियां

- ❖ **सामाजिक एजेंडे पर अभिजात वर्ग का कब्जा:** बड़े दानदाता नीतिगत निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं।
- ❖ **कॉर्पोरेट दुविधा:** व्यवसायों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। ऐसे में परोपकारी खर्चों को शेयरधारकों की संपत्ति के दुरुपयोग के रूप में देखा जा सकता है।
- ❖ **क्षेत्रीय और भौगोलिक असमानता:** परोपकारी दान प्रायः कुछ क्षेत्रों या शहरों तक केंद्रित हो गए हैं। **महाराष्ट्र और कर्नाटक को अधिकतम CSR फंड मिलता है, जबकि बिहार और ओडिशा इस मामले में काफी पीछे हैं।**
- ❖ **जवाबदेही और पारदर्शिता की कमी:** विदेशी फंडिंग प्राप्त करने वाले गैर-सरकारी संगठनों में से कुछ ही संगठन आयकर रिटर्न दाखिल करते हैं।

निष्कर्ष

परोपकार की आधारशिला ऐसे नैतिक मूल्यों पर टिकी होनी चाहिए जो समानता और न्याय को बढ़ावा देते हुए एक समानतावादी समाज की दिशा में कार्य करे। इसकी विशिष्टता यह है कि यह समाज के उन अंतिम वर्गों तक पहुंचने की क्षमता रखता है, जहां देश के करोड़ों लोग निवास करते हैं – ऐसे क्षेत्र जहां न तो राज्य की योजनाएं प्रभावी रूप से पहुंच पाती हैं और न ही बाजार की ताकतें। इसलिए, परोपकारिता का प्रभावी उपयोग समाज के सबसे वंचित और उपेक्षित वर्गों तक सहायता पहुंचाने के लिए किया जाना चाहिए।

3.2. सर्विलांस कैपिटलिज्म (Surveillance Capitalism)

परिचय

हालिया वर्षों में डिजिटल सूचना का विस्तार काफी तेजी से हुआ है। 1986 में यह केवल 1% था, जो 2013 तक 98% तक पहुंच गया। इसके चलते व्यक्तिगत डेटा 21वीं सदी में नई सम्पत्ति बनकर उभरा है। इस बदलाव ने **गूगल, मेटा और अमेजन** जैसी दिग्गज तकनीकी कंपनियों के नेतृत्व में **सर्विलांस कैपिटलिज्म** के उदय को बढ़ावा दिया है।

सर्विलांस कैपिटलिज्म से संबंधित नैतिक निहितार्थ

- ❖ **हेरफेर करना:** एल्गोरिदम के कारण यूजर्स के निर्णयों को आकार देने के लिए **संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों** का फायदा उठाया जाता है।
- ❖ **गोपनीयता का क्षरण:** डेटा अक्सर उचित सहमति के बिना एकत्र किया जाता है, जिसकी मदद से बड़े पैमाने पर निगरानी की जाती है।
- ❖ **व्यक्तिगत डेटा का वस्तु के रूप उपयोग:** उदाहरण के लिए- 2018 में, अमेरिका में स्लीप एपनिया मशीनों ने यूजर्स के डेटा को गुप्त रूप से बीमा कंपनियों को भेजा था, जिससे बीमा कवरेज प्रभावित हुआ था।
- ❖ **लोकतांत्रिक मूल्यों का उल्लंघन:** राज्य और कंपनियों द्वारा की जाने वाली निगरानी **नागरिक स्वायत्तता** का क्षरण करती है।
- ❖ **मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जोखिम:** उदाहरण के लिए- सोशल मीडिया एल्गोरिदम उन कंटेंट को प्राथमिकता देते हैं जो क्रोध और भय को ट्रिगर करते हैं तथा राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा देते हैं।

आगे की राह

- ❖ **मजबूत विनियामकीय फ्रेमवर्क:** उदाहरण के लिए- भारत को **DPDP अधिनियम को मजबूत करना चाहिए।**
- ❖ **एंटीट्रस्ट उपयोग:** बड़ी टेक कंपनियों के तकनीकी एकाधिकार को समाप्त करके उनकी अनियंत्रित शक्ति को कम करना चाहिए।
- ❖ **वैश्विक सहयोग:** इस संबंध में अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहिए, ताकि कम-विनियमित देशों में डेटा के दुरुपयोग को रोका जा सके।
- ❖ **प्रौद्योगिकी में नैतिक मूल्यों का समावेशन:** टेक कंपनियों को **निजता-आधारित डिजाइन** अपनाने हेतु प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

3.3. व्यावसायिक छंटनी की नैतिकता (Ethics of Business Downsizing)

परिचय

हाल ही में, माइक्रोसॉफ्ट ने अपने वैश्विक कर्मचारियों के 3% की छंटनी की घोषणा की है, जिससे लगभग हजारों कर्मचारी विभिन्न स्तरों, टीमों और क्षेत्रों में प्रभावित हुए हैं। हालांकि, यह छंटनी उत्पादकता, लाभ और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए की जा रही है, लेकिन इसे व्यावसायिक नैतिकता के सिद्धांत के विरुद्ध भी माना जा रहा है।

प्रमुख हितधारक				
कर्मचारी	मालिक/शेयरधारक	उपभोक्ता	समाज	सरकार और नियामक

व्यावसायिक छंटनी में शामिल नैतिक दुविधाएं

- ❖ **उपयोगितावाद बनाम कांटियन पूंजीवाद (Utilitarianism Vs Kantian Capitalism):** इमैनुअल कांट की नैतिक विचारधारा के अनुसार, किसी लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु किसी कर्मचारी को केवल एक साधन के रूप में प्रयोग करना नैतिक नहीं है।
- ❖ **कर्तव्यनिष्ठ बनाम परिणामवादी दृष्टिकोण (Deontological vs Teleological):** कर्तव्यनिष्ठ दृष्टिकोण छंटनी को उचित नहीं ठहराता, क्योंकि छंटनी से निष्पक्षता के सिद्धांतों का उल्लंघन होता है।
- ❖ **नैतिक सापेक्षवाद बनाम न्याय का सार्वभौमिकरण:** न्याय का सार्वभौमिक सिद्धांत यह कहता है कि सभी के साथ बिना किसी भेदभाव के निष्पक्ष व्यवहार होना चाहिए, चाहे वह किसी भी संदर्भ में हो।

आगे की राह

- ❖ **छंटनी के लिए अंतिम उपाय के रूप में उपयोगी।**
- ❖ **स्वैच्छिक छंटनी (आकर्षक सेवा निवृत्ति पैकेज में ट्रांसफर का विकल्प)**
- ❖ **त्वरित प्रतिभा रणनीति:** उदाहरण के लिए, अमेज़न जैसी कंपनियां अपने कर्मचारियों को 'एजुकेशन ऐज़ ए बेनिफिट प्रोग्राम' प्रदान करती हैं।
- ❖ **छंटनी से प्रभावित कर्मचारियों की सहायता करना:** छंटनी किए गए कर्मचारियों को नया सार्थक रोजगार खोजने में सक्रिय रूप से मदद करना।

3.4. जिम्मेदार पूंजीवाद (Responsible Capitalism)

परिचय

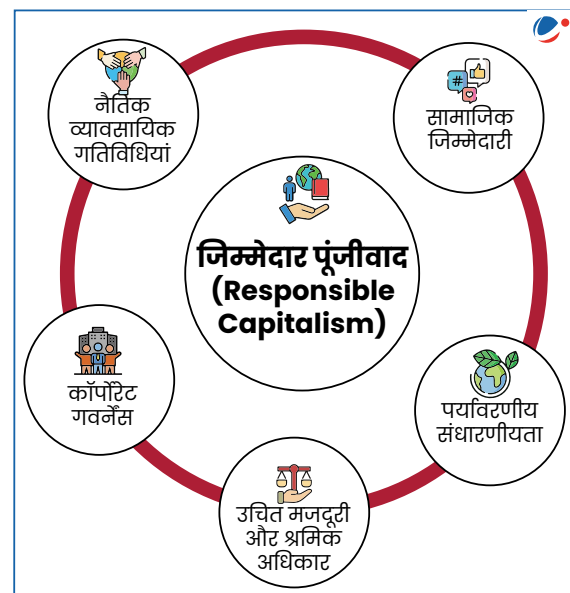
भारत की वित्त मंत्री ने मेक्सिको में टेक लीडर्स राउंडटेबल को संबोधित करते हुए 'जिम्मेदार पूंजीवाद' की आवश्यकता पर जोर दिया।

जिम्मेदार पूंजीवाद की जरूरत क्यों है?

- ❖ **वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने में सहायक:** यह कंपनियों और सरकारों को असमानता जैसी चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकता है।
- ❖ **लंबे समय तक व्यवसाय को जारी रखने में सहायक:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जैसे तकनीकी परिवर्तनों को बेहतर तरीके से अपनाने में भी मदद कर सकता है।
- ❖ **नैतिक शासन और हितधारक पूंजीवाद को प्रोत्साहन:** निर्णय लेने में निष्पक्षता को बढ़ावा देता है।

भारत में 'जिम्मेदार पूंजीवाद' को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम

- ❖ **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR):** कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 135 के तहत CSR व्यय अनिवार्य किया गया है।
- ❖ **पर्यावरण कानून:** इनमें शामिल हैं- प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, आदि।
- ❖ **श्रम कानूनों में सुधार:** वेतन संहिता; औद्योगिक संबंध संहिता; तथा स्वास्थ्य और कार्यदशा संहिता, 2020 आदि।
- ❖ **वित्तीय क्षेत्र की पहलें:** भारतीय रिजर्व बैंक के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को ऋण मानदंड, भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) के ग्रीन बॉन्ड दिशा-निर्देश, आदि।



4. नैतिकता और मीडिया (ETHICS AND MEDIA)

4.1. मीडिया एथिक्स और स्व-नियमन (Media Ethics and Self-Regulation)

परिचय

हाल ही में, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सरकार ने सभी मीडिया चैनलों, डिजिटल प्लेटफॉर्म और व्यक्तियों से रक्षा अभियानों एवं सुरक्षा बलों की गतिविधियों की लाइव कवरेज या रियल-टाइम रिपोर्टिंग से परहेज करने को कहा।

प्रमुख हितधारक			
मीडिया अभिनेता	सरकार	सामान्य जनता	पुलिस

क्यों भारत में प्रभावी मीडिया एथिक्स की आवश्यकता सर्वोपरि होती जा रही है?

- ◆ **गोपनीयता और सत्यनिष्ठा:** (उदाहरण के लिए, कई बार पत्रकारों ने निजी जीवन में किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत आचरण से संबंधित तथ्यों पर आधारित विशेष कहानियों को कवर किया है।)
- ◆ **बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों द्वारा क्रॉस-मीडिया स्वामित्व धारण** की प्रक्रिया के चलते जोखिमपूर्ण स्थितियों की उत्पत्ति में बढ़ोतरी हुई है।
- ◆ **अपर्याप्त जुर्माना** लगाने जैसे स्व-नियामक तंत्रों की अप्रभावी होना।

आगे की राह

- ◆ मीडिया की स्व-नियमन प्रणाली को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करना।
- ◆ **जुर्माने का निर्धारण** गलती करने वाले चैनल द्वारा **अर्जित लाभ के अनुपात में किया जाना चाहिए**।
- ◆ एक **सार्वभौमिक आचार संहिता** को लागू किया जाना चाहिए जो पत्रकारों के लिए निम्नलिखित दिशा-निर्देशों को निर्धारित करती हो।

4.2. सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स के समय में सामाजिक प्रभाव और अनुनय (Social Influence and Persuasion in times of Social Media and Influencers)

परिचय

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स हमारी राय, उपभोक्ता की रुचियों और खरीदारी के निर्णयों को आकार देने और फैशन, स्वास्थ्य तथा संगीत की हमारी धारणा को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रमुख हितधारक					
नागरिक	समाज	बाजार	सरकार	सोशल मीडिया	इन्फ्लुएंसर्स

इन्फ्लुएंसर संस्कृति से जुड़े नैतिक मुद्दे

- ◆ **विवेकहीन उपभोग:** इन्फ्लुएंसर अक्सर उत्पादों को आवश्यकता के लिए नहीं, बल्कि स्टेटस सिंबल के रूप में बढ़ावा देते हैं।
- ◆ **मनोवैज्ञानिक हेरफेर:** 'फियर ऑफ़ मिसिंग आउट' (FOMO) और सामाजिक स्तर पर तुलना को ट्रिगर करता है।
- ◆ **जवाबदेही की कमी:** कई इन्फ्लुएंसर्स अनौपचारिक राय बनाने वाले नेतृत्वकर्ता के रूप में कार्य करते हैं।
- ◆ **गोपनीयता का उल्लंघन:** बड़े इन्फ्लुएंसर्स अक्सर उपयोगकर्ता के डेटा को उचित सुरक्षा उपायों के बिना एकत्र और हैंडल करते हैं।
- ◆ **मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान:** ऑनलाइन आदर्श जीवन-शैली व्याकुलता, आत्म-सम्मान में कमी और असंतोष को बढ़ावा देती है।

आगे की राह

- ◆ **दिशा-निर्देशों को लागू करना:** सेलेब्रिटीज़, इन्फ्लुएंसर्स और वर्चुअल इन्फ्लुएंसर्स को "एंडोर्समेंट नो-हाउज़" जैसे दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए।
- ◆ **जागरूकता और शिक्षा में वृद्धि:** यह सवाल एक आलोचनात्मक सोच प्रक्रिया के माध्यम से उठाया जाना चाहिए कि **"क्या इन्फ्लुएंसर वास्तव में विशेषज्ञ हैं?"**

4.3. अनुनय और भ्रामक सूचना (Persuasion and Disinformation)

परिचय

अनुनय एक सामाजिक साधन के रूप में लोगों के व्यवहार को प्रभावित करके भ्रामक सूचनाओं का मुकाबला करने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है।

भ्रामक सूचना के विरुद्ध अनुनय कैसे काम कर सकता है?

- ❖ **विश्वास बनाना और विरोध को कम करना: उदाहरण के लिए**, कोविड वैक्सीन को लेकर लोगों की हिचकिचाहट को दूर करने में, स्थानीय डॉक्टरों या धार्मिक नेताओं द्वारा टीकों के महत्व के बारे में जानकारी देना अधिक कारगर साबित हुआ।
- ❖ **व्याप्त धारणाओं के विरुद्ध नई धारणाओं का सहारा लेना: उदाहरण के लिए**, कोविड के दौरान लोगों को हाथ धोने के लिए प्रेरित करना।
- ❖ **टकराव के बिना आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना: उदाहरण के लिए**, कट्टरता से बाहर निकालने से जुड़े कार्यक्रमों में खुले संवाद द्वारा व्यक्ति की विचारधारा संबंधी कमजोरियों पर सवाल किए जाते हैं।
- ❖ **समय के साथ निरंतर जुड़ाव: यदि कोई व्यक्ति किसी भ्रामक सूचना या विश्वास को मानता है**, तो इसके लिए अनुनयकारी को बार-बार सम्मानजनक तरीके से उससे बात करनी होगी।

निष्कर्ष

ऐसे युग में जहां भ्रामक सूचनाएं तेजी से फैलती हैं, अनुनय वास्तव में विश्वास, समानुभूति और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देकर एक मानवीय और रणनीतिक कदम के रूप में कार्य करती है। निरंतर, कथा-आधारित और सम्मानजनक संवाद के माध्यम से, यह व्यक्तियों को असत्य या भ्रामक सूचना पर सवाल उठाने तथा अपने ही विवेक और तर्क के आधार पर सच्चाई जानने में मदद करती है।

4.4. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लीलता (Obscenity on Digital Platforms)

परिचय

सुप्रीम कोर्ट ने “इंडियाज गॉट लैटेंट” नामक यूट्यूब शो में अश्लील टिप्पणियों से जुड़े मामले की सुनवाई करते हुए **सॉलिडिटर जनरल** से अनुरोध किया कि वे **ऑनलाइन दिखाए जाने वाले भद्दे कंटेंट पर नियंत्रण के लिए एक संतुलित नियामक उपाय प्रस्तुत करें**, जिससे **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Free Speech) पर संतुलन बना रहे**।

प्रमुख हितधारक				
कंटेंट क्रिएटर	डिजिटल प्लेटफॉर्म	सरकार	विनियामक निकाय	समग्र समाज

अश्लील डिजिटल कंटेंट को विनियमित करने में नैतिक मुद्दे

- ❖ **सेंसरशिप बनाम उचित प्रतिबंध:** अत्यधिक विनियमन रचनात्मकता को प्रभावित कर सकता है।
- ❖ **बदलते सामाजिक मानदंड और सांस्कृतिक संवेदनशीलता:** अश्लीलता एक सांस्कृतिक अवधारणा है जो समय के साथ बदलती रहती है।
- ❖ **सत्ता की गतिशीलता:** प्रश्न उठता है कि यह तय करने का अधिकार **किसे होगा कि कौन सा कंटेंट स्वीकार्य है?**
- ❖ **एजेंसी और संरक्षकवाद (Paternalism):** कंटेंट के उपयोगकर्ताओं को हानिकारक कंटेंट से बचाने और अपना कंटेंट चुनने की उनकी स्वायत्तता का सम्मान करने के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।
- ❖ **अश्लीलता का विनियमन बनाम कलात्मक स्वतंत्रता:** सार्वजनिक नैतिकता की रक्षा के लिए संसरशिप और कलाकारों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के बीच संघर्ष बना रहता है।

निष्कर्ष

एक जिम्मेदार डिजिटल मीडिया स्पेस बनाने के लिए **कानूनी स्पष्टता, स्व-नियमन, लोक जागरूकता और वैश्विक सहयोग** की आवश्यकता होती है। **न्याय, गरिमा, पारदर्शिता और जवाबदेही** जैसे नैतिक मूल्यों को कायम रखते हुए, डिजिटल प्लेटफॉर्म रचनात्मक स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन बना सकते हैं।

5. नैतिकता और प्रौद्योगिकी (ETHICS AND TECHNOLOGY)

5.1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी नैतिकता {Ethics of Artificial Intelligence (AI)}

परिचय

स्वास्थ्य देखभाल, पुलिसिंग, शिक्षा और गवर्नेंस जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का तेजी से बढ़ता उपयोग जहां एक ओर तकनीकी विकास को गति दे रहा है, वहीं दूसरी ओर इससे जुड़ी अनेक जटिल नैतिक दुविधाएं भी सामने आई हैं।

प्रमुख हितधारक				
यूजर्स	कंपनियां/ डेवलपर्स	निवेशक	राज्य और नियामक	नागरिक समाज संगठन (CSOs)

AI से जुड़ी नैतिक समस्याएं क्या हैं?

- ◆ **निजता में हस्तक्षेप और निगरानी:** डेटा निगरानी, चोरी, गोपनीयता उल्लंघन और व्यक्तिगत डेटा का दुरुपयोग।
- ◆ **हेरफेर और डीपफेक:** डीपफेक वीडियो या ऑडियो प्रतिरूपण (Impersonation), जिनका गलत सूचना फैलाने जैसे दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है।
- ◆ **AI प्रणाली का अपारदर्शी होना:** AI प्रणाली द्वारा लिए गए निर्णय **पारदर्शी नहीं होते हैं (ब्लैक बॉक्स समस्या)**।
- ◆ **पक्षपात/ पूर्वाग्रह:** यदि प्रशिक्षण डेटा में नस्ल, लिंग आदि से संबंधित पूर्वाग्रह शामिल हैं, तो ऐसे में AI प्रणाली में भी इनके बने रहने और आगे प्रसारित होने से **अनुचित व्यवहार और भेदभाव को बढ़ावा मिल सकता है**।
- ◆ **AI भ्रम (AI Hallucinations):** जब कोई AI मॉडल ऐसी जानकारी या पैटर्न बना देता है जो वास्तव में मानवीय पर्यवेक्षक की दृष्टि में मौजूद नहीं होते या जिनका कोई ठोस आधार नहीं होता, तो उसे AI भ्रम कहा जाता है।

आगे की राह (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नैतिक उपयोग हेतु यूनेस्को के सिद्धांत)

- ◆ **आनुपातिकता आधारित और हानि रहित:** AI प्रणाली का उपयोग करते समय मानव अधिकारों का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।
- ◆ AI प्रौद्योगिकियों के **मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का निरंतर मूल्यांकन** किया जाना चाहिए।
- ◆ **निजता का अधिकार और डेटा संरक्षण** को बढ़ावा देना चाहिए।
- ◆ **मानव निरीक्षण और अवधारणा:** मौजूदा कानूनी संस्थाओं को नैतिक और कानूनी रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

5.1.1. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्रिएटिविटी (AI and Creativity)

परिचय

हाल ही में, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर घिबली-शैली (Ghibli-style) आर्ट से प्रेरित तस्वीरों की बाढ़ आ गई, जो AI टूल्स का उपयोग करके बनाई गई थीं। जहां इन कलाकृतियों ने दुनिया भर के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और सराहना भी पाई, वहीं दूसरी ओर इसने कला जगत में नई बहस भी छेड़ दी है।

रचनात्मक कृतियों में AI से जुड़े सकारात्मक पहलु

 बेहतर उत्पादकता क्रिएटिव वर्कफ्लो को सुव्यवस्थित करना, दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करना आदि	 नवीन तरीका यह कलाकारों को नए क्रिएटिव विकल्प तलाशने में सक्षम बनाता है	 सहयोगात्मक क्षमता यह क्रिएटर्स और इंटेलिजेंट प्रणालियों के बीच सहयोग को सुगम बनाता है	 गुणवत्ता में सुधार यह कलात्मक परिणाम की गुणवत्ता और स्थिरता में सुधार करता है
---	---	--	--

रचनात्मक क्षेत्र में AI से जुड़े नैतिक मुद्दे

- ◆ **कलात्मक पवित्रता के लिए सम्मान:** AI-जनित कृतियां कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता और पवित्रता को संरक्षित करने के बारे में चिंताएं बढ़ा सकती हैं।
- ◆ **सहमति और स्वामित्व:** AI-संचालित परियोजनाओं में शामिल कलाकारों, क्रिएटर्स और प्रतिभागियों के अधिकारों के संबंध में प्रश्न उठते हैं।
- ◆ **संरक्षण बनाम दोहन:** इस संबंध में नैतिक प्रश्न उठता है कि क्या ऐसे प्रयासों का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना है या व्यावसायिक लाभ के लिए व्यक्तियों की पहचान एवं उनकी विरासत का दोहन करना है।
- ◆ **तकनीकी नियतिवाद (निर्धारणवाद):** क्रिएटिव इंडस्ट्री में AI को व्यापक रूप से अपनाने से होमोजेनाइजेशन आधारित दृष्टिकोण पर निर्भरता बढ़ सकती है।

आगे की राह

- ◆ **AI-संचालित क्रिएटिव प्रॉसेस में पारदर्शिता और प्रकटीकरण सुनिश्चित करना** चाहिए।
- ◆ **कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता को बनाए रखना**, क्रिएटर्स के योगदान को स्वीकार करना
- ◆ **क्रिएटिव प्रॉसेस में AI के नैतिक उपयोग के लिए नैतिक दिशा-निर्देश और सर्वोत्तम अभ्यास** विकसित किए जाने चाहिए।

5.2. ऑनलाइन गेमिंग की नैतिकता (Ethics of Online Gaming)

परिचय

हाल ही में, ऑनलाइन गेमिंग मध्यस्थों के लिए स्वैच्छिक आचार संहिता जारी की गई है। इसे ऑल इंडिया गेमिंग फेडरेशन (AIGF), ई-गेमिंग फेडरेशन (EGF) और फेडरेशन ऑफ इंडियन फैंटेसी स्पोर्ट्स (FIFS) के सहयोग से इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) की डिजिटल गेमिंग समिति के सदस्यों के संयुक्त घोषणा-पत्र के रूप में जारी किया गया है।

प्रमुख हितधारक				
गेमर्स	गेम डेवलपर्स	प्लेटफॉर्म प्रोवाइडर्स	नियामक निकाय	नागरिक समाज

ऑनलाइन गेमिंग से जुड़ी नैतिक चिंताएं

- ◆ **गेमिंग बनाम गैम्बलिंग:** गेमिंग में कौशल-आधारित गतिविधियां शामिल हैं, जबकि गैम्बलिंग में भाग्य के साथ अनिश्चित परिणामों पर पैसा लगाना शामिल है।
- ◆ **गोपनीयता संबंधी चिंताएं:** व्यापक रूप से व्यक्तिगत संवेदनशील डेटा का संग्रहण।
- ◆ **फेयर प्ले:** दुर्भावना रखने वाले कारकों द्वारा रियल-मनी गेम्स के परिणामों में हेरफेर किया जा सकता है।
- ◆ **जवाबदेही:** ऑनलाइन गेम्स सट्टेबाजी को बढ़ावा दे रहे हैं या यूजर्स को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

आगे की राह

- ◆ **प्राइवसी एथिक्स और डेटा सुरक्षा:** डेटा गुमनामीकरण और एन्क्रिप्शन तकनीक प्रदान की जानी चाहिए।
- ◆ **जिम्मेदारीपूर्ण गेमिंग:** उद्योग के हितधारकों, नियामकों और समर्थक समूहों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों पर जोर देते हुए सक्रिय उपाय और शैक्षिक पहलें आवश्यक हैं।
- ◆ **स्व-नियमन:** उदहारण के लिए, पहचान और आयु सत्यापन तथा नियमित ऑडिट करना।

6. सुर्खियों में रहे प्रमुख व्यक्तित्व (KEY PERSONALITIES IN NEWS)

6.1. महात्मा गांधी और करुणा (Mahatma Gandhi and Compassion)

परिचय

हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान-की-मून ने **करुणा** के संबंध में **महात्मा गांधी** के विचारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

करुणा के संबंध में महात्मा गांधी के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता



जलवायु संकट का समाधान करना: गांधीजी का दर्शन प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर जीवन जीने का समर्थन करता है।



समकालीन संघर्ष का समाधान: महात्मा गांधी का दृष्टिकोण "पाप से नफरत करो, पापी से नहीं" - मानव गरिमा को बनाए रखते हुए उन लोगों के साथ जुड़ने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है, जिनसे हम असहमत हैं।



आर्थिक संकट से निपटना: उनका ध्यान आत्मनिर्भरता, उत्पादन केंद्रों के विकेन्द्रीकरण, ट्रस्टीशिप के विचार, आदि पर केंद्रित था।



सामाजिक परिवर्तन की ताकत: महात्मा गांधी के विचारों को स्वच्छ भारत मिशन जैसी पहलों में उपयोग में लाया जा रहा है।



समाज में विखंडन से निपटना: समावेशी आध्यात्मिकता का उनका दृष्टिकोण सभी धर्मों का सम्मान करता है।

करुणा को आत्मसात करने के लिए आगे की राह

- ◆ **सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना:** इसमें सामाजिक क्षेत्रों के समक्ष आने वाली चुनौतियों को समझना और उनके समाधान के लिए पहलें शुरू करना शामिल है।
- ◆ **आत्म-करुणा का अभ्यास करना:** दूसरों की पीड़ा और भावनाओं को समझने में सक्षम होना।
- ◆ **गलतियों और असफलताओं को स्वीकार करना:** धैर्य रखने और दूसरों तथा खुद की गलतियों के लिए क्षमा करने पर ध्यान केंद्रित करने पर बल देना चाहिए।

6.2. रतन नवल टाटा (Ratan Naval Tata)

परिचय

हाल ही में, टाटा समूह के पूर्व चेयरमैन रतन नवल टाटा का निधन हो गया और इसके साथ ही एक महान युग का भी अंत हो गया।

रतन टाटा के जीवन से महत्वपूर्ण सबक

- ◆ **करुणापूर्ण पूंजीवाद (Compassionate Capitalism):** टाटा संस के लाभांश का 60-65% हिस्सा स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे धर्मार्थ कार्यों के लिए व्यय किया जाता है।
↳ उन्होंने भारत के पहले कैंसर अस्पताल की स्थापना की।
- ◆ **व्यावसायिक नैतिकता:** वे नैतिक नेतृत्व में दृढ़ विश्वास रखते थे और **अल्पकालिक लाभ** की तुलना में **मजबूत नैतिक सिद्धांतों, सत्यनिष्ठा और सामाजिक कल्याण को अधिक प्राथमिकता** देते थे।
- ◆ **उद्यमिता को बढ़ावा देना:** उन्होंने कई उभरते स्टार्ट-अप्स में निवेश किया, जैसे- कैशकरो, स्नैपडील, ओला कैब्स, डॉगस्पॉट, टीबॉक्स इत्यादि। इससे देश में **नवाचार की संस्कृति** को प्रोत्साहन मिला।
- ◆ **संधारणीयता को बढ़ावा:** टाटा समूह ने 2045 तक नेट जीरो उत्सर्जन हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

निष्कर्ष

रतन टाटा का जीवन **नैतिक नेतृत्व का प्रतीक** था, जिससे हमें **करुणा, मजबूत नेतृत्व, विनम्रता और दृढ़ता** जैसे मूल्यवान सबक प्राप्त होते हैं।

7. विविध (MISCELLANEOUS)

7.1. युद्ध की नैतिकता (Ethics of War)

प्रस्तावना

रूस-यूक्रेन और इज़राइल-हमास के बीच हालिया संघर्ष और युद्ध के दौरान किए गए क्रूर कृत्यों के बारे में सोशल मीडिया में इमेज और स्टोरीज़ का निरंतर प्रसार अनेक नैतिक प्रश्न खड़े करता है। ये संघर्ष **न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत** का भी उल्लंघन करते हैं।

युद्ध से उत्पन्न होने वाली नैतिकता से जुड़ी हुई चिंताएं कौन-कौन सी हैं?

- ◆ **सही पक्ष बनाम गलत पक्ष का द्वंद्व:** युद्ध और हिंसा को समझने का प्रयास अक्सर इस निर्णय तक सीमित हो जाता है कि एक पक्ष सही है और दूसरा गलत।
- ◆ **दंड और प्रतिशोध:** युद्ध में, **दंड और प्रतिशोध पर आधारित तर्कों** को अक्सर गलती को सुधारने के नैतिक तरीके के रूप में देखा जाता है।
- ◆ **इंसानियत का पतन:** वर्तमान समय में कुछ शक्तिशाली देश अपने **उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में युद्ध का सहारा** ले रहे हैं।
- ◆ **व्यक्तिगत बनाम सामूहिक पहचान:** युद्ध जैसे संघर्ष एक ऐसी प्रवृत्ति को दर्शाते हैं जहां लोग व्यक्तियों को मानव के रूप में नहीं देखते हैं, अपितु उन्हें **केवल सामूहिक पहचान के संदर्भ में** देखा जाता है।

आगे की राह

- ◆ युद्ध के दौरान सैनिकों के आचरण को नियंत्रित करने वाले **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और संस्थानों को मजबूत करना और उन्हें लागू करना** चाहिए।
- ◆ **कठोर हथियार नियंत्रण और निरस्त्रीकरण का समर्थन करना।**
- ◆ **शांति स्थापना और संघर्ष समाधान।**

7.2. शांति के पहलू (Aspects of Peace)

परिचय

हाल ही में, **संयुक्त राष्ट्र सभ्यता गठबंधन के 10वें वैश्विक फोरम** में वैश्विक नेताओं ने **कैस्केस घोषणा-पत्र** को अपनाया है। इसमें उन्होंने मौजूदा अशांत वातावरण में शांति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जताई है।

प्रमुख हितधारक	
वैश्विक/ राजनीतिक शांति	सरकारें, अंतर्राष्ट्रीय संगठन, नागरिक समाज संगठन
सामाजिक और सांस्कृतिक शांति	कम्युनिटी लीडर, धार्मिक और आध्यात्मिक लीडर, मुख्यधारा का मीडिया और सोशल मीडिया
व्यक्तिगत/ आंतरिक शांति	व्यक्ति, परिवार, शैक्षणिक संस्थान

शांति के कुछ दार्शनिक पहलू

- ◆ **गांधीवादी शांति की अवधारणा:** महात्मा गांधी के अनुसार, शांति का मूल आधार **अहिंसा और सत्य** है।
- ◆ **शांति की उपयोगितावादी अवधारणा:** एक शांतिपूर्ण समाज सामूहिक कल्याण की भावना को बढ़ावा देता है।
- ◆ **शांति पर कांट की अवधारणा:** इमैनुअल कांट के अनुसार, शांति केवल एक निष्क्रिय अवस्था नहीं है, बल्कि यह व्यक्तियों और राष्ट्रों का सक्रिय नैतिक कर्तव्य भी है।
 - ▶ वे **तर्कसंगतता, सार्वभौमिक नैतिकता और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग** के जरिए स्थायी शांति के पक्षधर थे।

शांति की बहाली और उसे बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम

- ◆ **वैश्विक शांति (Global Peace):** विश्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र (UN) जैसी विभिन्न वैश्विक संस्थाएं संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित कर रही हैं। साथ ही, उनके द्वारा बहुधुवीयता को बढ़ावा देकर वैश्विक स्थिरता और शांति सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है।
- ◆ **राजनीतिक शांति (Political Peace):** उदाहरण के लिए, **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ)**
- ◆ **पारिस्थितिक शांति (Ecological Peace):** उदाहरण के लिए, **पेरिस समझौता।**

- ♦ **आंतरिक शांति (Inner Peace):** उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और विश्व ध्यान दिवस (World Meditation Day)
- ♦ **सांस्कृतिक शांति (Cultural Peace):** यूनेस्को (UNESCO) के वर्ल्ड कल्चर फोरम विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बीच आपसी समझ और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं।

7.3. मौजूदा दौर की विदेशी सहायता से संबंधित नैतिक सरोकार (Ethical Considerations in Contemporary Foreign Aid)

परिचय

हाल के दिनों में, विदेशी सहायता (Foreign Aid) की अवधारणा गहन समीक्षा के अधीन रही है। विशेष रूप से, संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) द्वारा अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी (USAID) के संचालन को 90 दिनों के लिए निलंबित करने की कार्रवाई के बाद चर्चा और बढ़ गई है।

मौजूदा दौर की विदेशी सहायता से संबंधित नैतिक सरोकार



निर्भरता:

उदाहरण के लिए, कई अफ्रीकी देश विदेशी सहायता पर निर्भर हो गए हैं, जिससे उनकी आर्थिक नीतियां प्रभावित हुई हैं।



भ्रष्टाचार:

उदाहरण के लिए, श्रीलंका का आर्थिक संकट विदेशी सहायता के दुरुपयोग और भ्रष्टाचार के कारण और गहरा गया।



दूसरे देश की संवेदनशीलता का ख्याल नहीं करना:

उदाहरण के लिए, कुछ अफ्रीकी और एशियाई देशों में महिलाओं के जनन स्वास्थ्य संबंधी अधिकार अभियानों को सांस्कृतिक या धार्मिक मान्यताओं के कारण प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। स्थानीय लोग इन अभियानों को अनैतिकता को बढ़ावा देने वाला मानते हैं।



राजनीतिक मंशा:

उदाहरण के लिए, चीन अपनी 'ऋण-जाल कूटनीति' के तहत अन्य देशों में निवेश को अपना राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करता है।



पर्यावरण को नुकसान:

कुछ सहायता परियोजनाओं, जैसे बड़े पैमाने पर कृषि संबंधी पहलों के कारण पर्यावरणीय क्षति हुई है।

आगे की राह

- ♦ सहायता का आवंटन, प्रबंधन और प्रभाव मूल्यांकन में पारदर्शिता बढ़ाना।
- ♦ सहायता परियोजनाओं में जलवायु लचीलापन, नवीकरणीय ऊर्जा और संधारणीय कृषि जैसी पर्यावरणीय पहलुओं को प्राथमिकता देना।
- ♦ स्थानीय समुदायों को शामिल करना: दी जाने वाली सहायता स्थानीय संस्कृति तथा संदर्भ के अनुसार व्यवस्थित और अनुरूप होनी चाहिए।

7.4. नैतिकता और जलवायु परिवर्तन (Ethics and Climate Change)

परिचय

ग्लेशियोलॉजिस्ट और स्थानीय समुदाय ने नेपाल के याला ग्लेशियर के समाप्त होने पर शोक व्यक्त किया है। 1970 के दशक से अब तक यह ग्लेशियर 66% तक सिकुड़ चुका है। इससे यह नेपाल का पहला ग्लेशियर होगा जिसे "मृत" घोषित कर दिया जाएगा। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के पिघलने की गति तेज हो गई है।

प्रमुख हितधारक				
सरकारें	अंतर-सरकारी संगठन	व्यवसाय और निगम	देशज लोग	वैज्ञानिक समुदाय

जलवायु परिवर्तन से जुड़े नैतिक मुद्दे

- ♦ **विभिन्न क्षेत्रों और आबादी पर असंगत प्रभाव:** विकासशील देश और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को अक्सर अपनी सुभेद्यता तथा अनुकूलन के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी के कारण जलवायु प्रभावों का व्यापक प्रभाव झेलना पड़ता है।

- ◆ **जिम्मेदारियों का असमान वितरण:** ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में औद्योगिक देशों ने सबसे अधिक योगदान दिया है। तथा जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों का सामना हर किसी, विशेष रूप से वंचित लोगों को करना पड़ता है।
- ◆ **देशज लोगों के लिए जलवायु न्याय:** जलवायु परिवर्तन देशज लोगों की भूमि से जुड़ी और जीवन के पारंपरिक तरीकों के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है।
- ◆ **तकनीकी असमानता:** जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों और स्वच्छ ऊर्जा समाधानों तक पहुंच सभी देशों तथा समुदायों के लिए एक समान नहीं है।

आगे की राह

- ◆ **हास/ क्षति की रोकथाम हेतु:** जलवायु परिवर्तन के परिणामों का बेहतर अनुमान लगाना।
- ◆ **एहतियाती दृष्टिकोण:** निश्चित वैज्ञानिक प्रमाणों के अभाव के आधार पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों की रोकथाम करने या शमन करने के उपायों के अंगीकरण को स्थगित नहीं करना।
- ◆ **एकजुटता:** जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील लोगों और समूहों की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सहायता करना।

7.5. मृत्युदंड और नैतिक आयाम (Ethics of Capital Punishment)

परिचय

एमनेस्टी इंटरनेशनल की 2024 की एक रिपोर्ट के अनुसार चीन, ईरान, सऊदी अरब और सिंगापुर जैसे देशों में फांसी की सजा के मामलों में 32% की वृद्धि दर्ज की गई है। ऐसे में, मृत्युदंड आधुनिक आपराधिक न्याय प्रणाली और नैतिकता के संदर्भ में एक अत्यंत विवादास्पद विषय बन गया है।

प्रमुख हितधारक		
दोषी व्यक्ति	पीड़ितों के परिवार	समाज
कानूनी और न्यायिक प्रणालियां	मानवाधिकार संगठन	सरकारें और नीति निर्माता

मृत्युदंड के पक्ष में तर्क

- ◆ **निवारक उपाय:** उपयोगितावाद (परिणामवादी नैतिकता) के सिद्धांत के आधार पर, कुछ विद्वानों का तर्क है कि मृत्युदंड गंभीर अपराधों को रोकता है।
- ◆ **मानसिक शांति और संतुष्टि:** अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि मृत्युदंड पीड़ितों के परिवारों के लिए मानसिक शांति प्रदान करता है।
- ◆ **सार्वजनिक वित्त पर बोझ:** उच्च जोखिम वाले, हिंसक अपराधियों को सुरक्षा के साथ जेलों में रखना सरकार के लिए महंगा साबित होता है।
- ◆ **अन्य:** आपराधिक पुनरावृत्ति की रोकथाम, आदि।

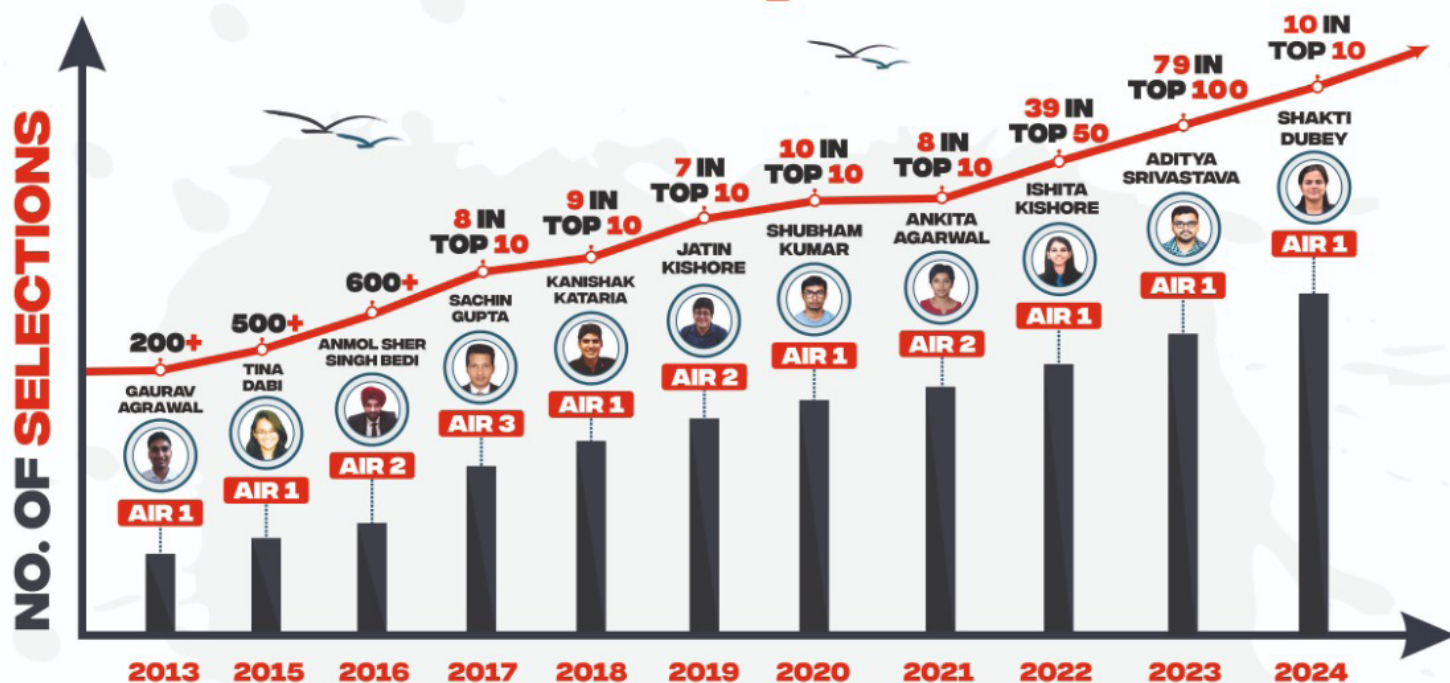
मृत्युदंड के विपक्ष में तर्क

- ◆ **मानवाधिकारों का उल्लंघन:** कान्ट की कर्तव्य-मूलक नैतिकता (Deontological Ethics) के अनुसार, कुछ कृत्य (जैसे- किसी का जीवन लेना) नैतिक रूप से गलत होते हैं, भले ही उनके परिणाम अच्छे क्यों न हों।
- ◆ **ठीक न की जा सकने वाली त्रुटि और भेदभाव का जोखिम:** अगर किसी व्यक्ति को फांसी दे दी जाती है, तो इसे पलट नहीं सकते।
- ◆ **अपराध निवारण और विकल्पों की कमी:** इस बात का बहुत कम प्रमाण है कि मृत्युदंड अपराध को रोकने में आजीवन कारावास से अधिक प्रभावी है।

आगे की राह

- ◆ **विधि आयोग की सिफारिश:** आतंकवाद और संबंधित अपराधों को छोड़कर सभी अपराधों के लिए मृत्युदंड को समाप्त करने की सिफारिश की थी।
- ◆ **अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का कार्यान्वयन:** नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिज्ञा-पत्र (ICCPR) का अनुच्छेद 6 केवल "सबसे गंभीर अपराधों" के लिए मृत्युदंड की अनुमति देता है और इसे समाप्त करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है।
- ◆ **मानवाधिकार संगठन:** न्याय व्यवस्था को पीड़ित-केंद्रित बनाया जाए और पुनर्स्थापनात्मक न्याय में अपराधी को सुधारने और समाज में फिर से जगह बनाने के लिए काम किया जाता है।

OUR ACHIEVEMENTS



LIVE/ONLINE
Classes Available
www.visionias.in



Foundation Course GENERAL STUDIES PRELIMS cum MAINS 2026, 2027 & 2028

**DELHI : 30 JULY, 8 AM | 7 AUGUST, 11 AM | 14 AUGUST, 8 AM
19 AUGUST, 5 PM | 22 AUGUST, 11 AM | 26 AUGUST, 2 PM | 30 AUGUST, 8 AM**

GTB Nagar Metro (Mukherjee Nagar): 10 JULY, 8 AM | 29 JULY, 6 PM

हिन्दी माध्यम 7 अगस्त, 2 PM

**AHMEDABAD: 12 JULY | BENGALURU: 22 JULY | BHOPAL: 27 JUNE | CHANDIGARH: 18 JUNE
HYDERABAD: 30 JULY | JAIPUR: 5 AUG | JODHPUR: 10 AUG | LUCKNOW: 22 JULY | PUNE: 14 JULY**

फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन 2026

► प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज

DELHI : 7 अगस्त, 2 PM

JAIPUR : 20 जुलाई

JODHPUR : 10 अगस्त



Scan the QR CODE to download VISION IAS App. Join official telegram group for daily MCQs & other updates.

[/visionias.upsc](https://www.facebook.com/visionias.upsc)

[/c/VisionIASdelhi](https://www.youtube.com/channel/UCVnIAsDelhi)

[/c/VisionIASdelhi](https://www.instagram.com/visioniasdelhi)

[/t.me/s/VisionIAS_UPSC](https://t.me/s/VisionIAS_UPSC)

Heartiest Congratulations

to all Successful Candidates

10 in **TOP 10** Selections in **CSE 2024**
from various programs of **Vision IAS**

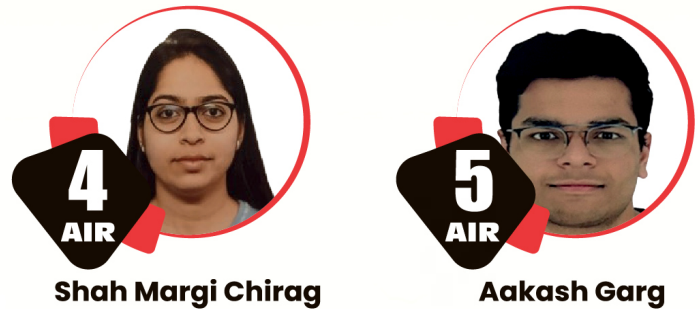


Shakti Dubey



Harshita Goyal
GS Foundation
Classroom Student

Dongre Archit Parag
GS Foundation
Classroom Student



Shah Margi Chirag

Aakash Garg



Komal Punia

Aayushi Bansal

Raj Krishna Jha

Aditya Vikram Agarwal

Mayank Tripathi

हिंदी माध्यम में 30+ चयन CSE 2024 में



Ankita Kanti

Ravi Raaz

Mamata

Sukh Ram

Amit Kumar Yadav



HEAD OFFICE

33, Pusa Road,
Near Karol Bagh Metro Station,
Opposite Pillar No. 113,
Delhi - 110005

MUKHERJEE NAGAR CENTER

Plot No. 857, Ground Floor,
Mukherjee Nagar, Opposite Punjab
& Sindh Bank, Mukherjee Nagar

GTB NAGAR CENTER

Classroom & Enquiry Office,
above Gate No. 2, GTB Nagar
Metro Building, Delhi - 110009

FOR DETAILED ENQUIRY

Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066



enquiry@visionias.in



[@visioniashindi](https://www.youtube.com/@visioniashindi)



[/visionias.upsc](https://www.facebook.com/visionias.upsc)



[/vision_ias_hindi/](https://www.instagram.com/vision_ias_hindi/)



[/hindi_visionias](https://www.telegram.com/hindi_visionias)



अहमदाबाद



बेंगलुरु



भोपाल



चंडीगढ़



दिल्ली



गुवाहाटी



हैदराबाद



जयपुर



जोधपुर



लखनऊ



प्रयागराज



पुणे



रांची